सेन्ट्रल जोन इंश्योरेंस एम्पलाईज एसोसियेशन

(ए.आई.आई.ई.ए. से संबद्ध)

33, प्रभांजलि, आर.डी.ए. कालोनी, टिकरापारा, रायपुर (छ.ग.)

अध्यक्ष : का. अजीत केतकर

महासचिव : का. डी. आर. महापात्र

परिपत्र क्र. : 1/2023

दिनांक : 01/01/2024

मध्य क्षेत्र के समस्त साथियों के नाम

प्रिय साथियों ,

विषय : नव वर्ष - नव अभिनंदन

नववर्ष 2024 की आगमन की बेला में हम सीजेडआईईए की ओर से बीमा कर्मचारियों,उनके परिजनों तथा समस्त साथियों को क्रांतिकारी अभिनंदन और शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं। यह नव वर्ष उन सभी के जीवन में नई सुबह के साथ नई आशा, नई संभावनाएं, अमन-चैन-शांति-सद्भाव लेकर आए, यही हमारी शुभेच्छा है।

वर्ष 2023 अब इतिहास का अध्याय बनने जा रहा है। इस अध्याय में, एक ओर रूस-यूक्रेन युद्ध में मारे गये निर्दोषों का दंश दर्ज हो रहा है तो दूसरी ओर दशकों से अपनी मातृभूमि के लिए संघर्षरत फिलिस्तीन की जनता के अधिकारों पर अतिक्रमण के लिए दोषी इजरायल द्वारा गाजा में मासूम बच्चों, स्कूलों, अस्पतालों में बमबारी से मारे जा रहे निर्दोष मासूमों, बेगुनाह नागरिकों के खून की स्याही से रक्तिम पन्नों का भी साक्षी 2023 बना है। यह परिपत्र लिखे जाने तक इजरायली हमलों से गाजा में 20,915 लोगों की हत्या की जा चुकी है, जिनमें 8000 से ज्यादा बच्चे हैं, 55398 लोग घायल हैं और अनगिनत लोग बमबारी से बने मलबों के ढेर में दबे हुए हैं। अमरीकी साम्राज्यवाद की सरपरस्ती और हथियार के व्यापार के लिए इंसानों की लाशों के ढेर पर भी मुनाफे की वहशी हवस की उसकी भूख में इन त्रासदियों की जड़ें छिपी हैं। यह युद्ध बंद हो, दुनिया में शांति कायम हो, बेगुनाहों की लाशों के ढेर और निर्दोषों की जान से अपने निहित हित के लिए खेला जा रहा यह अमानवीय खेल बंद हो, वर्ष 2024 से यही हमारी आस है।

विश्व की मेहनतकश अवाम जिस पर बाजार ही सर्वशक्तिमान है, के नाम पर थोपी जा रही नवउदारवादी नीतियों से बढ़ती असमानता की गहरी होती खाइयों की चुभन को जाते हुए वर्ष ने और गहरे से महसूस किया है। विगत वर्ष 2023 की शुरुआत में ही अमरीका सहित विकसित देशों में एक के बाद एक क्रेडिट कंपनियों के दिवालियेपन से उसकी बर्बादी की आहट आने लगी थी। इस असमानता ने वैश्विक स्तर पर बहुसंख्य जनता की वंचना को और अधिक गहरा ही किया है। इसकी आड़ में दुनिया भर में पलायनों से प्रवासियों की संख्या बढ़ी है, वहीं इन प्रवासियों के खिलाफ घृणा फैलाकर नवउदारवादी नीतियों से उपजी असमानता के विरुद्ध गहरे असंतोष का ध्यान भटकाने के लिए दक्षिणपंथी ताकतों का उभार भी दिखा है। लेकिन वर्ष 2023 में विश्व की जनता का शोषणकारी नीतियों और दक्षिणपंथी ताकतों के खिलाफ उभरता संघर्ष भी इस वर्ष ने दर्ज किया है। नव वर्ष में दुनिया के वंचित तबकों का शोषण के खिलाफ एक बेहतर समाज के लक्ष्य को हासिल करने का संघर्ष मजबूत हो और ये दुनिया एक बेहतर दुनिया बने, जिसमें हर इंसान को सम्मान से जीने का हक उपलब्ध हो, नववर्ष 2024 से यही हमारी उम्मीदें हैं।

पिछला वर्ष देश के आम नागरिकों के लिए भी अनेक झंझावातों का साक्षी रहा। एक ओर सरकार देश में चहुंओर खुशहाली का दंभ भर रही है तो दूसरी ओर ऑक्सफॉम की रिपोर्ट ने बढ़ती भारी असमानता को उजागर किया है। इस रिपोर्ट के अनुसार भारत में सबसे धनी 1 प्रतिशत लोगों का देश की पर 40 प्रतिशत से अधिक संपदा पर नियंत्रण है जबकि सबसे निचले हिस्से की आधी आबादी के पास देश की कुल संपदा का मात्र 3 प्रतिशत हिस्सा है। सर्वाधिक युवा आबादी वाले देश में आलम यह है कि बेरोजगारी की दर अक्टूबर 2023 में 10.5 प्रतिशत से अधिक है, याने भावी बेहतर भविष्य का सपना देखने वाला युवा चरम बेरोजगारी का दंश झेल रहा है। खाद्यान्न वस्तुओं की कीमतें बढ़ रही हैं और महंगाई अपने चरम उछाल पर है। भूख सूचकांक में भारत के 125 देशों में 111वें स्थान पर खिसक जाना इसलिए चिंता का विषय होना चाहिए किन्तु विश्व गुरु के रूप में स्थापित हो जाने के सरकारी दावों और प्रचार में मदमस्त हुक्मरान इन आंकड़ों को ही अस्वीकार कर रहे हैं। निजीकरण की आक्रामक नीतियों ने देश के श्रमिक वर्ग के समक्ष न केवल नई चुनौतियों को जन्म दिया है वरन् उसने संसाधनों की भयानक लूट और चंद हाथों में पूंजी के केन्द्रीयकरण की नई परिभाषाएं लिखी हैं। इसके खिलाफ श्रमिक वर्ग का संघर्ष भी तीखा हो रहा है। मजदूर, किसान की कायम हुई एकजुटता की प्रतिध्वनि 3 अगस्त 2023 को हुए संयुक्त सम्मेलन उसके बाद तीन दिनों तक चले नवंबर माह के महापड़ाव में भी दिखाई दी। निश्चय ही रोटी, रोजगार, आजीविका का श्रमिक वर्ग का यह संघर्ष और नई ऊंचाई पर वर्ष 2024 में पहुंचेगा, ताकि शासक वर्ग और सरकार की नीतियों में बुनियादी बदलाव सुनिश्चित हो, यही हमारा विश्वास है।

यह वर्ष विश्व पटल पर देश का मान बढ़ाने वाली हमारी बेटियों के

यौन उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष का भी साक्षी रहा। ऐसा शायद पहली बार हुआ कि उनके अपराधियों को सरकार पक्ष की ओर से बेशर्मी के साथ संरक्षण की बानगी भी हमें देखने मिली। अब वे खिलाड़ी अपने परिश्रम से प्राप्त पदक और सम्मान की वापसी तक करने के लिए बाध्य हो रहे हैं। यह वर्ष मणिपुर में जघन्यता के चरम के रूप में जातीय संघर्षों और हजारों लोगों की उपस्थिति में देश की सीमा पर कारगिल युद्ध में एक सिपाही की पत्नी के साथ अमानवीय यौनाचार की असभ्यता पर भी सरकारी चुप्पी का घृणित अध्याय जोड़कर विदा हो रहा है। मणिपुर की घटना बहुसंख्यवादी राजनीति कैसी तबाही ला सकती है उसका एक दुखद उदाहरण है। नये संसद भवन में सेनेगल प्रतिस्थापित हो रहा है, और लोकतंत्र के इस सबसे बड़े संस्थान में भी विरोध के स्वर स्वीकार नहीं हैं, याने कोई भी असहमति की आवाज सत्ता को मंजूर नहीं है इसका उद्घोष सुनाई पड़ रहा है। समूचे विपक्ष के 170 से अधिक सांसदों का पूरे सत्र से निलंबन भी कुछ यही बयां कर रहा है। इससे देश के जनतंत्र, लोकतांत्रिक अभिव्यक्ति, संघवाद याने एक लोकतांत्रिक समाज के समूचे ताने-बाने पर आसन्न संकट को मुखरता से सामने आया है। निहित राजनीतिक स्वार्थ तथा कार्पोरेट जगत के अपने मित्रों को राजनैतिक संरक्षण के लिए सांप्रदायिक विभाजन और नफरती उन्माद को प्रोत्साहन का भी साक्षी बना है। आम लोगों की धार्मिक आस्था का ऐसा राजनैतिक उपयोग हमारे संविधान की बुनियादी प्रस्थापनाओं पर भी गहरा आघात पहुंचाता है। यह जनवाद, जनतंत्र, लोकतंत्र और अभिव्यक्ति के अधिकार को ही ध्वंस कर तानाशाही की ओर ले जाता है। यह वह बड़ा खतरा है जिससे लड़े बिना श्रमिक वर्ग अपने भावी संघर्ष को चला ही नहीं सकता। उम्मीद है नववर्ष नफरतों के इस दौर को बदलने और मोहब्बत के पैगाम के साथ इंसानियत की रक्षा के लिए नये संघर्षों का आगाज करेगा, ताकि हर भारतीय अपनी भारतीयता की पहचान को मजबूत कर सके, यही हमारा विश्वास है।

बीमा कर्मचारी, अपने प्रिय संस्थान के समक्ष विनिवेश की प्रक्रिया के बाद उपजी चुनौती के साथ ही अर्थव्यवस्था की नकारात्मकता और नियामक संस्था द्वारा इस संस्था को कमजोर करने अपनाये जा रहे नित नये हथकंडों और सुधार प्रस्तावों को थोपने तथा निजी प्रतिस्पर्धियों से मिल रहे कड़े मुकाबले के इस दौर में भी अपने प्रिय संस्थान की निरंतर प्रगति की राह में आई बाधाओं का मुकाबला कर अब तक इसकी हिफाजत किए हुए है। वर्ष 2024 में इस संघर्ष को हमें निश्चय ही और सशक्त करना होगा ताकि एलआईसी की निरंतर प्रगति को कायम रखने में हम सफल हों यही हमारी अपेक्षा है। इन विपरीत परिस्थितियों में भी बीमा कर्मचारियों ने एआईआईईए के सतत संघर्ष और कर्मचारियों-अधिकारियों के संयुक्त मंच की साझी एकता के बल पर त्यौहार अग्रिम में वृद्धि, पीएलएलआई, मेडिक्लेम योजना में शामिल होने के एक और अवसर और सर्वाधिक महत्वपूर्ण पारिवारिक पेंशन को 15 प्रतिशत से 30 प्रतिशत किये जाने की उपलब्धियों हासिल कीं।

इस वर्ष की शुरुआत 1 अगस्त 2022 से देय वेतन पुनर्निर्धारण के निर्णायक समाधान के लिए संघर्ष के आगाज के साथ हो रही है। एलआईसी के यूनियनों के संयुक्त मंच ने 10 जनवरी 2024 को बहिर्गमन हड़ताल से संघर्ष का उद्घोष किया है। नये साथियों के लिए पुरानी पेंशन योजना की बहाली के साथ ही जब तक यह न हो उनके भविष्य निधि में प्रबंधकीय अंशदान, सरकारी कर्मचारियों की तरह 14 प्रतिशत किये जाने, तृतीय व चतुर्थ श्रेणी संवर्ग में तत्काल नई भर्ती प्रारंभ करने तथा व्यवसाय सहित उद्योग की कार्यप्रणाली में किये जा रहे बदलावों में प्रबंधकीय एकतरफावाद का विरोध भी इन संघर्षों का महत्वपूर्ण विषय है। निश्चय ही इन संघर्षों की लौ नये वर्ष में और प्रबल होगी तथा हम अपने उद्योग की रक्षा के साथ ही वेतन पुनर्निर्धारण और अन्य मांगों का सार्थक समाधान प्राप्त करने में वर्ष 2024 में सफल होंगे, यही हमारा विश्वास है।

साथियों!, इस परिप्रेक्ष्य में वर्ष 2024 नव वर्ष, नई आकांक्षाओं, उम्मीदों और अपेक्षाओं के साथ आ रहा है, जहां चुनौतियां है तो उम्मीदें भी हैं। इस नववर्ष में हर चुनौती का मुकाबला कर, हम हमारे प्रिय संस्थान, प्रिय संगठन, प्रिय देश, विविधता, एकता की हिफाजत करते हुए आगामी दिनों में कार्पोरेट, सांप्रदयिक गठजोड़ की पक्षधर वर्तमान निजाम और उनकी नीतियों को निर्णायक रूप से बदलकर मेहनतकशों की पक्षधर और जनपक्षधर विकल्प के निर्माण के लिए साझे संघर्ष को और सुदृढ़ करने और ऐसी हर राजनीति, जो हमें पीछे धकलने, हमसे सब कुछ छीन लेने पर आमादा हो, उसे पीछे धकेलने, पराजित करने सार्थक हस्तक्षेपकारी भूमिका अदा करने एकजुट होकर आगे बढ़ेंगे, यही हमारा विश्वास है। इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता कि संघर्ष बिना न कभी कुछ हासिल हुआ हुआ है और न होगा। जीवन के हर पल की प्रगति का यही शाश्वत सत्य है, इसलिए , हताशा, निराशा नहीं बर्ष 2024 नई उम्मीदों और नये परिवेश का वर्ष बने, इसके लिए हम सब अपना योगदान सुनिश्चित करेंगे और हम इसमें विजयी होंगे, इसी विश्वास के साथ आप सबको नूतन वर्षाभिनंदन !

वर्ष 2024 का यही संदेश है-

मेरी मंजिल मेरा हौसला देख कर
डर मुझे भी लगा फासला देखकर
पर मैं बढ़ता गया रास्ता देखकर ।
खुद-ब-खुद मेरे नजदीक आती गई
मेरी मंजिल, मेरा हौसला देखकर ।।

क्रांतिकारी अभिवादन के साथ...

आपका साथी

(डी.आर. महापात्र)
महासचिव